

## रॉबर्ट वानॉय, पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 9

### उत्पत्ति 2 - बगीचे में दो पेड़

#### 3. ईडन गार्डन ...

#### बी। बगीचे के पेड़

हम उत्पत्ति अध्याय 2 शीर्षक " ईडन गार्डन " के तहत चर्चा कर रहे थे, जो कि बी.3 है। और हमने सबसे पहले वहां की भौगोलिक स्थिति को देखा था जो हमें 3.बी पर ले आती है। "बगीचे के पेड़।" मैं सबसे पहले उत्पत्ति अध्याय 2 के पाठ की ओर मुड़ना चाहता हूँ और बगीचे के पेड़ों से संबंधित बाइबिल के कथनों पर एक त्वरित नज़र डालना चाहता हूँ। आप इसे उत्पत्ति 2:9 में पाते हैं जहाँ आप पढ़ते हैं, "और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब प्रकार के वृक्ष उगाए जो देखने में मनभावन और खाने में अच्छे होते हैं। जीवन का वृक्ष, बाटिका के बीच में, और भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष भी है।"

तो श्लोक 9 में दो पेड़ों का उल्लेख किया गया है। श्लोक 17 में आप पढ़ते हैं, "पर भले और बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तुम न खाना। क्योंकि जिस दिन तुम उसमें से खाओगे उसी दिन अवश्य मर जाओगे।" और फिर अध्याय 3, पद 3 में जहां सांप हव्वा से बात कर रहा है, आप सांप को हव्वा की प्रतिक्रिया में पढ़ते हैं, "परन्तु बाटिका के बीच में जो वृक्ष है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है, 'तू उसमें से न खाना, न उसे छूना, नहीं तो मर जाओगे।" तो आपके पास ईडन गार्डन में दो पेड़ों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। 2:17 में आदम को अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाने की आज्ञा दी गई थी, और जब उस आदेश को तोड़ा गया जैसा कि हम अध्याय 3 में पाते हैं, आदम और हव्वा को बगीचे से बाहर निकाल दिया गया और उन्हें प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई जीवन के वृक्ष के लिए, यह अध्याय 3 के अंत में है।

#### 1. जीवन का वृक्ष

तो आइए नजर डालते हैं इन दो पेड़ों पर. आपने देखा कि आपकी कक्षा की रूपरेखा शीट पर एक उप-बिंदु 1. और उप-बिंदु 2. है, 1. "जीवन का वृक्ष" है, और 2.

"अच्छे और बुरे के ज्ञान का वृक्ष" है। सबसे पहले जीवन के वृक्ष का प्रश्न यह है कि इसका महत्व क्या है? नाम का अर्थ क्या है? इसे जीवन का वृक्ष क्यों कहा जाता है? पाठ में इसकी कोई व्याख्या नहीं है। यह हमें पाठ से कुछ हद तक निष्कर्ष निकालने के लिए छोड़ देता है और पेड़ का महत्व क्या है, इस पर काफी चर्चा हुई है। उत्पत्ति 3:22-24 में, पतन के बाद, आप पढ़ते हैं, "प्रभु परमेश्वर ने कहा, 'देख, मनुष्य भले बुरे का ज्ञान प्राप्त करके हम में से एक के समान हो गया है, और अब ऐसा न हो कि वह अपना हाथ बढ़ाकर ले भी जीवन का वृक्ष और खाओ और सदैव जीवित रहो। इसलिये यहोवा परमेश्वर ने उसे अदन की वाटिका से उस भूमि पर खेती करने के लिये भेजा, जहां से उसे ले जाया गया था, और उस ने उस मनुष्य को बाहर निकाल दिया, और उस ने बारी के पूर्व में करूब और एक जलती हुई तलवार रख दी, जो हर ओर पहरे की ओर घूमती थी। जीवन के वृक्ष का मार्ग।"

पवित्र प्रतीक के रूप में जीवन का वृक्ष - केल्विन

अब, जिन टिप्पणीकारों ने नाम के महत्व और इस वृक्ष के जीवन का वृक्ष होने के महत्व पर चर्चा की है, उनमें से एक जॉन कैल्विन हैं। केल्विन की टिप्पणियों पर टिप्पणी के माध्यम से मैं बस यह कह सकता हूँ, यदि आपने कभी केल्विन की टिप्पणियों को नहीं देखा है, तो आपको कभी-कभी ऐसा करना चाहिए, भले ही वह ऐसे व्यक्ति हैं जो कई शताब्दियों पहले रहते थे, ज्यादातर मामलों में पवित्रशास्त्र की उनकी व्याख्या बहुत ही व्यावहारिक है। , और वे कई मायनों में उत्कृष्ट टिप्पणियाँ हैं।

मुझे लगता है कि जीवन के वृक्ष पर केल्विन का दृश्य आकर्षक है, और मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि वह इस पर क्या कहता है। वह जीवन के वृक्ष को जीवन और ईश्वर के साथ संगति और उस पर निर्भरता के एक पवित्र प्रतीक के रूप में देखता है। अब ये मेरी शर्तें हैं जो उनके दृष्टिकोण को संक्षेप में प्रस्तुत करने की कोशिश कर रही हैं, लेकिन वह इसे ईश्वर के साथ संगति और उस पर निर्भरता में जीवन के एक पवित्र प्रतीक के रूप में देखते हैं। यही उनके विचार का सार है।

मुझे लगता है कि 3.बी. के तहत आपकी ग्रंथ सूची में, जो पृष्ठ 8 से नीचे का दो-तिहाई हिस्सा है, आपके पास केल्विन की टिप्पणियों के पृष्ठ 116 से 118 तक का संदर्भ है। अब, जब वह कहता है कि यह एक पवित्र प्रतीक है तो उसका क्या मतलब है? जीवन के वृक्ष की पवित्र प्रकृति पर टिप्पणी करते हुए, कैल्विन क्या कहते हैं: "उन्होंने जीवन के वृक्ष को यह नाम दिया, इसलिए नहीं कि यह मनुष्य को वह जीवन प्रदान कर सके जिसके साथ वह पहले मिला था, बल्कि इसलिए कि यह उस जीवन का प्रतीक और स्मारक बनो जो उसे परमेश्वर से मिला था।" इसलिए उसने इसे इसका नाम दिया, प्रभु ही वह है जो पेड़ों का नाम रखता है, उसने इसे यह नाम दिया ताकि यह उस जीवन का प्रतीक और स्मारक बन सके जो उसने भगवान से प्राप्त किया था, क्योंकि हम जानते हैं कि यह किसी भी तरह से नहीं है इसका अर्थ असामान्य है कि ईश्वर हमें बाहरी प्रतीकों द्वारा अपनी कृपा का प्रमाण दे। वह अपनी शक्ति को बाहरी संकेतों में स्थानांतरित नहीं करता है, और यह महत्वपूर्ण है, बल्कि उनके द्वारा वह अपना हाथ हमारी ओर बढ़ाता है क्योंकि सहायता के बिना हम उस तक नहीं पहुंच सकते हैं। इसलिए वह पेड़ को उस जीवन के प्रतीक और स्मारक के रूप में देखता है जो उसे ईश्वर से प्राप्त हुआ है, ऐसा नहीं है कि पेड़ में कोई शक्ति निहित थी, बल्कि उस आध्यात्मिक वास्तविकता के बाहरी प्रतीक के रूप में इसे मनुष्य के लिए पवित्र बना दिया गया है। इसलिए, केल्विन के विचार में, जीवन के उस वृक्ष का फल खाना, जीवन और ईश्वर के साथ संगति और उस पर निर्भरता का एक संकेत और मुहर था।

हालाँकि, ईश्वर के साथ संगति और ईश्वर पर निर्भरता का वह जीवन केवल तब तक मनुष्य का अधिकार रहेगा जब तक वह आज्ञाकारिता के मार्ग पर चलता रहेगा, और दूसरे पेड़ ने उस आवश्यकता को चिह्नित किया। उसे इसके संबंध में एक आदेश दिया गया था, जब उसने इसे तोड़ दिया था कि अब उसे जीवन के वृक्ष तक और उसका प्रतीक तक पहुंच नहीं होगी।

जब केल्विन एडम और ईव को बगीचे से हटाने और पतन के बाद पेड़ की निकटता और पहुंच पर टिप्पणी करता है, तो वह कहता है और यह पृष्ठ 183 और 184 पर है। वह कहता है, "मनुष्य को प्रतीक से वंचित करके, वह उसे भी छीन लेता है बात का संकेत दिया।

ऐसा नहीं है कि प्रभु उसे मोक्ष की सभी आशाओं से दूर कर देंगे, बल्कि उसने जो कुछ दिया है उसे छीन लेने से मनुष्य कहीं और नई सहायता की तलाश करेगा। अब बलिदानों में एक प्रायश्चित्त रह गया है, वह केवल मसीह की मृत्यु से ही जीवन पुनः प्राप्त कर सकता है। फिर यह कथन फिर से जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण है, "यह निश्चित है कि मनुष्य भगवान की इच्छा के विरुद्ध जीवन का आनंद लेने में सक्षम नहीं होता अगर उसने पूरे पेड़ को भी खा लिया होता। पेड़ में कभी भी कोई आंतरिक प्रभावकारिता नहीं थी। दूसरे शब्दों में, यह कोई पेड़ नहीं है जिसके फल में कुछ प्रकार के रासायनिक गुण थे जो मनुष्य को शाश्वत जीवन देंगे। "पेड़ में कभी भी कोई आंतरिक प्रभावकारिता नहीं थी, लेकिन भगवान ने इसे जीवनदायी बना दिया, जहां तक कि उन्होंने इसके उपयोग में मनुष्य के लिए अपनी कृपा को सील कर दिया था। तो यह एक पवित्र प्रतीक बन जाता है, एक अनुग्रह है, आप कह सकते हैं, उस प्रतीक के उपयोग में मनुष्य के लिए सीलबंद, लेकिन जब वह चीज़ ही चली जाती है, वह चीज़ जीवन और ईश्वर के प्रति निर्भरता और आज्ञाकारिता है, जब वह चीज़ चली जाती है, फिर प्रतीक चिन्ह भी हटा दिया जाता है।"

मुझे लगता है कि एक सादृश्य हो सकता है, शायद यह किसी भी तरह से एक आदर्श सादृश्य नहीं है, लेकिन आप न्यायाधीशों की पुस्तक में पाते हैं, आपको सैमसन और उसके लंबे बाल याद हैं और उन बालों और सैमसन के पास मौजूद ताकत के बीच एक संबंध था। जब उसने बाहरी चिन्ह खो दिया तो उसने वह भी खो दिया जिसका वह प्रतीक था। मैं सोचता हूँ कि पेड़ के बारे में हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि इसमें आंतरिक रूप से यह जीवन देने वाली संपत्ति है, बल्कि कुछ ऐसा है जिसे भगवान ने एक पवित्र प्रतीक के रूप में उपयोग किया है। हाँ?

केल्विन के शब्दों में, "मनुष्य को प्रतीक से वंचित करके वह संकेतित वस्तु को भी छीन लेता है।" वह वहां प्रतीक और संकेतित वस्तु के बीच बहुत घनिष्ठ संबंध देखता है। मनुष्य को उस प्रतीक तक पहुंचने की अनुमति नहीं है जब एक बार उसने अवज्ञा की और उस प्रतीक को खो दिया जिसका वह प्रतीक है। अब माना जाता है कि उत्पत्ति 3:22 के शब्दों से पता चलता है कि पेड़ में कुछ अंतर्निहित था। केल्विन इसे उसी तरह समझाएंगे

जैसे मैंने अभी उनके बयान को पढ़ते हुए कहा था। अब कुछ ऐसे लोग हैं जो महसूस करेंगे कि केल्विन उस कथन के साथ न्याय नहीं करता है। यह संभवतः उनके दृष्टिकोण का सबसे कमजोर बिंदु है। आप ध्यान दें कि उसके विचार का एक हिस्सा ऐसा भी है जो हमेशा कायम नहीं रहता है और वह यह है कि मनुष्य अपने पतन और निष्कासन से पहले संभवतः नियमित आधार पर जीवन के वृक्ष का फल खाता है, संगति में अपने जीवन के एक पवित्र प्रतीक के रूप में और भगवान पर निर्भरता।

यदि आपको वोस पढ़ना याद है, तो एक पवित्र प्रतीक के रूप में वोस का दृष्टिकोण केल्विन के समान है। वह जीवन के सिद्धांत के बारे में बात करते हैं जो पवित्र रूप से जीवन के वृक्ष का प्रतीक है, और वोस कहते हैं, "सच्चाई यह है कि जीवन ईश्वर से आता है, मनुष्य के लिए इसमें ईश्वर की निकटता शामिल है जो मनुष्य के साथ ईश्वर की संगति की केंद्रीय चिंता है इसे प्रदान करने के लिए।" लेकिन इस सवाल पर कि क्या आदम और हव्वा ने जीवन के पेड़ का फल खाया, वोस कहते हैं, "नहीं।" उन्होंने इसे कभी नहीं खाया और एक बार जब वे पाप में पड़ गए तो उन्हें निष्कासित कर दिया गया, इसलिए वास्तव में उन्होंने कभी इसमें हिस्सा नहीं लिया। अब शायद उस संबंध में वोस का निष्कर्ष श्लोक 22 के उस अंतिम वाक्यांश से संबंधित है। वह इसे स्पष्ट या स्पष्ट नहीं करता है, लेकिन शायद उसका दृष्टिकोण इसके साथ अधिक न्याय करता है। लेकिन दूसरी ओर, मुझे लगता है कि केल्विन की व्याख्या पर्याप्त है।

यदि आप अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष पर विचार करते हैं, तो क्या रासायनिक गुणों में कुछ अंतर्निहित था, आप मुझे अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के बारे में बता सकते हैं जो किसी तरह से लोगों को वह ज्ञान देगा, चाहे वह कुछ भी हो? हम उस पर चर्चा करेंगे। फिर, ऐसा नहीं लगता कि बात यही है। अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के संबंध में मुद्दा एक परिवीक्षाधीन परीक्षण है और परीक्षण फल के गुणों में निहित आज्ञाकारिता में नहीं था। तो दोनों पेड़ों के बीच एक समानता है।

संस्कारों पर टिप्पणियाँ

मुझे सामान्य तौर पर संस्कारों पर कुछ टिप्पणियाँ करने दीजिए। मुझे लगता है कि प्रोटेस्टेंट इंजीलवादियों और विशेष रूप से कट्टरपंथी खेमे के बीच संस्कार शब्द का उपयोग करने में एक तरह की अनिच्छा है जो शायद रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्र की प्रतिक्रिया के रूप में है जिसमें आपके पास एक पवित्र प्रकार का धर्मशास्त्र है जिसे लैटिन अभिव्यक्ति एक्स ओपेरा ओपेरा द्वारा लेबल किया गया है, "द्वारा यह जिस काम पर काम करता है।" दूसरे शब्दों में, आप अनुष्ठान से गुजरते हैं और यंत्रवत् या लगभग जादुई तरीके से, कुछ परिणाम उत्पन्न होता है, चाहे आप बपतिस्मा, बपतिस्मा पुनर्जनन या किसी भी चीज़ के बारे में बात करें। पापों की सामूहिकता और क्षमा, आप बस अनुष्ठान से गुजरते हैं और यह परिणाम उत्पन्न करता है। मुझे नहीं लगता कि यह विचार बिल्कुल भी बाइबिल आधारित है। आपके पास बहुत सारे बाइबिल कथन हैं जो औपचारिक अर्थ में किसी भी प्रकार के अनुष्ठान कार्य के खिलाफ बोलते हैं जैसे कि कोई मूल्य होना। वास्तव में, पुराने नियम में पुराने नियम के रीति-रिवाजों के विपरीत सत्य है। प्रभु इस्राएलियों से बार-बार कहते हैं, उदाहरण के लिए यशायाह अध्याय 1, आमोस अध्याय 5 के बारे में सोचें, "तुम्हारे बलिदान मेरे लिए घृणित हैं, उन्हें दूर करो, मैं उन्हें नहीं चाहता। मैं जो चाहता हूँ वह आज्ञाकारिता है, बलिदान से भी अधिक।" मुझे वह दिल चाहिए जो मेरे पास सही हो। फिर, निस्संदेह, बलिदान के लिए एक जगह है। इजराइल जिस चीज में फंस गया था, वह अनुष्ठानिक प्रकार की औपचारिकता थी जो बुतपरस्तवाद के साथ संयुक्त थी और फिर भगवान के कानून के प्रति पूरी तरह से उपेक्षा और अवज्ञा का जीवन जी रही थी, यह सोचकर कि वे एक अनुष्ठान के माध्यम से सब कुछ ठीक कर सकते हैं।

जिस तरह से रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्र को संस्कारों के संबंध में विकसित किया गया है, उसके कुछ सादृश्य यहां दिए गए हैं, लेकिन संस्कारों के लिए एक सुधारित दृष्टिकोण में, मैं आपको वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेचिज़्म की परिभाषा देता हूँ, प्रश्न 92। प्रश्न यह है संस्कार किसे कहते हैं? उत्तर है: "मसीह द्वारा स्थापित एक पवित्र अध्यादेश जिसमें समझदार संकेतों द्वारा, [और समझदार का अर्थ है संवेदी, जिन्हें इंद्रियों द्वारा माना जा सकता है] जिसमें समझदार संकेतों द्वारा, मसीह और नई वाचा के लाभों का प्रतिनिधित्व

किया जाता है, सील किया जाता है और विश्वासियों पर लागू होता है।” यह मसीह द्वारा स्थापित एक अध्यादेश है जिसमें, समझदार संकेतों द्वारा, मसीह और नई वाचा के लाभों का प्रतिनिधित्व, मुहरबंद और विश्वासियों पर लागू किया जाता है। अब, निःसंदेह, ईश्वर की अर्थव्यवस्था के वर्तमान युग में अपने लोगों के साथ उसके संबंधों के सुधारित दृष्टिकोण में दो संस्कार हैं, प्रभु भोज और बपतिस्मा, लेकिन तब उन्हें आध्यात्मिक वास्तविकता के बाहरी दृश्यमान संकेतों के रूप में देखा जाएगा और वे उन्हें विश्वास की सहायता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। संस्कारों और वचनों में, वे आवश्यकता में भिन्न हैं। वह परमेश्वर का वचन है, धर्मग्रंथ है। मोक्ष के लिए शब्द अपरिहार्य है, संस्कार नहीं। संस्कार कुछ कम नहीं बल्कि वचन के प्रत्यक्ष संकेत से अधिक कुछ नहीं हैं। तो संस्कार एक अदृश्य अनुग्रह का एक दृश्य रूप है, और मुझे लगता है कि इस अर्थ में आप उस शब्द को ईडन गार्डन में जीवन के वृक्ष पर लागू कर सकते हैं।

**छात्र प्रश्न :** "क्या आप कह रहे हैं कि संस्कार केवल एक प्रतीक हैं, पारंपरिक दृष्टिकोण के बारे में क्या कहना है कि वास्तव में कुछ प्रभावकारिता है?"

एक अनुग्रह है जो संस्कारों में भागीदारी के माध्यम से प्रदान किया जाता है। हाँ, इसे उत्पत्ति 2 में जीवन के वृक्ष के साथ लागू करने के लिए, कि ईश्वर के साथ संगति और निर्भरता में जीवन को उसके उपयोग के माध्यम से मनुष्य पर प्रतीक, सील और लागू किया गया था। इसीलिए केल्विन कहेंगे कि उन्होंने इसका हिस्सा लिया। इसमें एक अनुग्रह शामिल था, लेकिन यह यंत्रवत् या जादुई रूप से प्राप्त नहीं हुआ।

रहस्योद्घाटन में जीवन का वृक्ष

जीवन के इस वृक्ष के साथ थोड़ा और आगे जाने दो । प्रकाशितवाक्य में, आपके पास जीवन का एक वृक्ष है जैसे उत्पत्ति अध्याय 2 में, पवित्रशास्त्र की शुरुआत और पृथ्वी पर मनुष्य के अस्तित्व की शुरुआत, प्रकाशितवाक्य 2:7 में आपके पास जीवन का वृक्ष है, और 22:2, 14 में भी , और रहस्योद्घाटन के 19. आइए उन अंशों पर नजर डालें। प्रकाशितवाक्य 2:7 में "जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा ने कलीसियाओं से क्या कहा;

जो जय पाए, मैं उसे जीवन के उस वृक्ष का फल खाने को दूंगा जो परमेश्वर के स्वर्ग के बीच में है।" और प्रकाशितवाक्य 22:2 में, "उसकी सड़क के बीच में," यह नया यरूशलेम अनुवाद है, "और नदी के दोनों ओर जीवन का वृक्ष था जो बारह प्रकार के फल लाता था और हर एक में अपना फल देता था वह महीना और उस वृक्ष के पत्ते जो जाति जाति के चंगाई के लिये थे।" और फिर श्लोक 14 में, "धन्य हैं वे जो अपने वस्त्र धोते हैं ताकि उन्हें जीवन के वृक्ष के पास आने का अधिकार मिले और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश कर सकें।" पद 19, "यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक के शब्दों में से कुछ निकाल दे, तो परमेश्वर जीवन के वृक्ष में से, और पवित्र नगर में से, और जो कुछ इस पुस्तक में लिखा है उसमें से उसका भाग छीन लेगा।" अब मैं स्पष्ट रूप से सोचता हूँ कि प्रकाशितवाक्य में जीवन का वृक्ष उत्पत्ति 2 में ईडन गार्डन में जीवन के वृक्ष का प्रतिबिंब है।

बाइबिल स्वर्ग से शुरू और समाप्त होती है। उत्पत्ति 2 में यह पतन से पहले का ईडन गार्डन है, रहस्योद्घाटन में यह नया यरूशलेम है। जीवन के वृक्ष का मार्ग जो उत्पत्ति 3 में बंद कर दिया गया था, प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर पर विश्वास करने वाले लोगों के लिए फिर से खुला है। देखिए, मुझे लगता है कि यह सादृश्य है, यह फिर से प्रकाशितवाक्य में भगवान पर विश्वास करने वाले लोगों के लिए खुला हो गया है। आप पूछ सकते हैं क्यों? यह कैसे संभव हुआ? यह मसीह द्वारा संभव बनाया गया है क्योंकि आप अध्याय 22 के पद 14 में पढ़ते हैं, "धन्य हैं वे जो अपने वस्त्र धोते हैं, कि उन्हें जीवन के वृक्ष का अधिकार मिले और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करें।" वह वस्त्र धोने का सन्दर्भ, उसका क्या महत्व है? प्रकाशितवाक्य 7:14 को देखें। आप 7:14 में पढ़ते हैं, "और मैं ने उस से कहा, 'महोदय, तू जानता है,' और उस ने मुझ से कहा, 'ये वे हैं जो उस बड़े क्लेश से निकल आए हैं, और अपने वस्त्र लोह में धोकर श्वेत किए हैं मेमने का।' तो आप देख सकते हैं कि आपके पास वह प्रतीकवाद शामिल है, जिसमें वस्त्रों को धोना और उन्हें मेमने के खून में सफेद करना शामिल है। यह मसीह का खून है जो इन वस्त्रों को शुद्ध बनाता है, यह मसीह की धार्मिकता है जो आस्तिक पर लागू होती है, और यही जीवन के वृक्ष तक फिर से पहुंच प्रदान करती है। इसलिए जो लोग मसीह के कार्य के माध्यम से पाप से क्षमा और शुद्धि चाहते हैं, उन्हें



जीवन के वृक्ष का अधिकार मिलता है, मुझे लगता है कि यही विचार है, यही शिक्षा है, लेकिन अवज्ञाकारी, जो मसीह से बाहर हैं, उनके पास इस तक पहुंच नहीं होगी। तो प्रश्न पर वापस आते हुए, मुझे लगता है कि प्रकाशितवाक्य में जीवन के वृक्ष के महत्व और उत्पत्ति 2 में जो है उसके बीच एक बड़ी समानता है।

मुझे नहीं लगता कि अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल में कुछ भी अंतर्निहित था जिसने मनुष्य को अच्छे और बुरे का ज्ञान दिया। यह फल नहीं था, यह कृत्य था। तब मुझे यह कहना सुसंगत लगता है कि जीवन के वृक्ष के फल में भी कुछ भी अंतर्निहित नहीं था। सैमसन का चित्रण यह कहना था कि बालों में कुछ भी आंतरिक नहीं था। माना जाता है कि आप उत्पत्ति 2 और विशेष रूप से 3:22 या 3:23 को इस तरह से पढ़ सकते हैं जो फल की अधिक शाब्दिक और प्रभावकारी भूमिका के अनुरूप होगा। सवाल यह है कि क्या इसे लेने का यह सबसे अच्छा तरीका है? यह संभव है।

## 2. अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष a. जनरल 2-3 पेड़ पर पाठ

आइए 2.2 पर चलते हैं: "भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष।" आप पहले से ही इन दोनों पेड़ों पर वोस पढ़ चुके हैं और जैसा कि आप जानते हैं कि अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ में कई विविध विचार हैं और नाम का महत्व क्या है और इस पर काफी चर्चा और विवाद है। फलस्वरूप, नाम के साथ जो अर्थ जुड़ना है, वह क्या है। आइए पहले पाठ में दी गई जानकारी को फिर से देखें। वह छोटा सा. आपके रूपरेखा पत्र पर, यह पाठ में दी गई जानकारी के लिए है। सबसे पहले, यह एक पेड़ है जिसे भगवान अच्छे और बुरे के ज्ञान का पेड़ कहते हैं। आप देखते हैं कि उत्पत्ति 2 के पद 9 में, प्रभु इसे नाम देते हैं। दूसरे, श्लोक 17 जो हम पहले ही पढ़ चुके हैं, प्रभु ने आदम से कहा कि उसे उस पेड़ का फल नहीं खाना चाहिए और जिस दिन वह खाएगा उसी दिन मर जाएगा। अब फिर से इस मुद्दे पर वापस आने के लिए हम अभी चर्चा कर रहे हैं, मैं बस मूल रूप से कहना चाहता हूं, उसे खाने से मना किया गया था, उसे यह नहीं बताया गया था कि यह एक जहरीला पेड़ है। जो मृत्यु आएगी वह ईश्वर की सजा होगी, इसका मतलब यह नहीं है कि यह फल की रासायनिक

संरचना का भौतिक प्रभाव है। हम उस पर बाद में वापस आएंगे, लेकिन उससे कहा गया है कि इसे मत खाओ, उसे यह नहीं बताया गया है कि यह एक जहरीला पेड़ है। तीसरा, यह एकमात्र पेड़ है जिसे खाने से उसे मना किया गया था, और हम इसे ईव के कथन से लेते हैं, "तुम इसका फल न खाना और न ही इसे छूना।"

चौथा बिंदु जो पेड़ से संबंधित बाइबिल के आंकड़ों के संबंध में आता है वह एक प्रश्न है, आप 3:5 में पढ़ते हैं, ईव का कथन, "क्योंकि ईश्वर जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे।" यह हव्वा का कथन नहीं है, यह सर्प का कथन है, "क्योंकि परमेश्वर जानता है कि जिस दिन तुम उसका खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।" अब प्रश्न पद 5 में साँप के उस कथन के संबंध में है, क्या वह सच बोल रहा था? यदि मनुष्य पेड़ का फल खाये तो क्या वह परमेश्वर के समान होगा? शैतान या साँप यही कहता है, "परमेश्वर जानता है कि जिस दिन तुम खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।" मैं इसका उत्तर दूंगा, मैं हां कहूंगा, और मैं ऐसा उत्पत्ति 3:22 के आधार पर कहूंगा। आप 3:22 में पढ़ते हैं, "प्रभु परमेश्वर ने कहा, 'देख, मनुष्य भले बुरे का ज्ञान करने में हम में से एक के समान हो गया है। अब ऐसा न हो कि वह अपना हाथ बढ़ाकर जीवन का वृक्ष तोड़ ले,' इत्यादि। उसे बगीचे से निकाल दिया गया है। परन्तु परमेश्वर स्वयं 3:22 में कहते हैं, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है।" अब, मुझे लगता है कि इससे हमें अधिकांश जानकारी मिल जाती है, अब प्रश्न व्याख्या का है। नाम और उससे जुड़े इन कथनों का क्या अर्थ है?

### पेड़ का पौराणिक दृश्य

अनेक मत प्रचलित हुए हैं, जिनमें से एक पौराणिक मत है। वोस संक्षेप में बताते हैं कि, यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो उच्च आलोचनात्मक विचारधारा की विशेषता है जो बाइबिल सामग्री में पौराणिक सम्मिलन को देखता है। विचार यह है कि यह कहानी बुतपरस्त पौराणिक कथाओं से ली गई है और बाइबिल के रिकॉर्ड में रखी गई है और यह

देवताओं की ईर्ष्या को दर्शाती है, "ऐसा न हो कि मनुष्य को कुछ ऐसा हासिल हो जाए जो उनका निजी दैवीय विशेषाधिकार था," और वह अच्छे और बुरे का ज्ञान है . अब वोस उस पौराणिक दृष्टिकोण पर चर्चा करते हैं और उस पर आपत्ति जताते हैं, वह कहते हैं, "भगवान ने स्वयं बगीचे में पेड़ लगाया था और मनुष्य द्वारा पेड़ खाने के बाद भगवान ऐसा व्यवहार नहीं करते जैसे कि उन्हें मनुष्य से डरने की कोई बात है, ऐसा प्रतीत नहीं होता है मुद्दा यह है पौराणिक दृष्टिकोण में, अच्छे और बुरे के ज्ञान की विभिन्न व्याख्या की जाती है, कुछ लोग इसे मनुष्य के पशु अवस्था से तर्क और मानव स्तर तक बढ़ने के रूप में देखते हैं, और विचार यह होगा कि देवता चाहते थे कि वह एक जानवर बना रहे। अन्य लोग इसे मनुष्य के तर्क की अवस्था से ऊपर उठने के रूप में नहीं बल्कि बर्बरता के साथ सभ्यता की अवस्था में पहुंचने के रूप में समझेंगे, इस विचार के साथ कि देवता अपने विशेषाधिकार को बनाए रखना चाहते थे, सभ्यता की इस अवस्था को, देवता अपने पास रखना चाहते थे अपना विशेषाधिकार।" वोस की आपत्ति यह है कि अच्छे और बुरे को जानना नैतिक है, शारीरिक नहीं। दूसरे शब्दों में, अध्याय के संदर्भ में यह ऐसा कुछ नहीं है जो फायदेमंद या हानिकारक हो, यह भौतिक अर्थ में मुद्दा है, यह एक नैतिक मुद्दा है, यह एक नैतिक मुद्दा है, और यह पौराणिक व्याख्या उसके साथ न्याय नहीं करती है।

### वोस का पेड़ का दृश्य

अब उस प्रकार के दृष्टिकोण के विरुद्ध, वोस ने अपनी स्वयं की व्याख्या विकसित की है। और मैं आपके लिए इसे संक्षेप में बता दूँ, यह वोस का दृष्टिकोण होगा। उनका कहना है कि अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष को अच्छे और बुरे के ज्ञान का वृक्ष कहा जाता है क्योंकि यह मनुष्य को परिवीक्षा के माध्यम से धार्मिक और नैतिक परिपक्वता की स्थिति तक ले जाने के लिए भगवान का नियुक्त साधन है, और संक्षेप में यही उनका विचार है, और मैं उसे दोहराऊंगा. यह मनुष्य को परिवीक्षा के माध्यम से धार्मिक और नैतिक परिपक्वता की स्थिति तक ले जाने के लिए ईश्वर द्वारा नियुक्त साधन है। वह वोस के पेज 31 पर है। अब इसके संबंध में ध्यान दें कि वोस के विचार में, नाम तटस्थ है और परिणामों का पूर्वाग्रह नहीं

करता है। नाम तटस्थ है, दूसरे शब्दों में, अच्छे और बुरे के ज्ञान का वृक्ष उस नाम में कुछ भी नहीं है, अच्छे और बुरे का ज्ञान जो या तो वांछनीय है या अवांछनीय है, यह तटस्थ है। यह भी ध्यान दें कि अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त करना कोई अवांछनीय या दोषी बात नहीं है, यह वोस के विचार में है, ऐसा कुछ नहीं जिसके लिए आप दोषी होंगे यदि आपने इसे हासिल कर लिया। और निश्चित रूप से इसके संबंध में वोस के विचार में, मनुष्य को अच्छे और बुरे को जानने से मना नहीं किया गया था, और पेड़ से खाने के खिलाफ निषेध का मतलब यह नहीं था कि मनुष्य को अच्छे और बुरे को जानने से मना किया गया था।

वोस के विचार में, मनुष्य परिवीक्षाधीन विकल्प के दो कांटों में से एक को लेकर अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त कर लेगा। दूसरे शब्दों में, वह आज्ञा का पालन कर सकता है और उस मार्ग पर अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त कर सकता है जिसे आप आज्ञाकारिता के बारे में कह सकते हैं, पेड़ का हिस्सा न लेकर, या वह अवज्ञा कर सकता है और उस मार्ग को अपना सकता है, वह अच्छे और बुरे का ज्ञान भी प्राप्त कर सकता है उस रास्ते पर जाकर. आप देखते हैं कि उनके विचार में पेड़ मनुष्य को परिवीक्षा के माध्यम से धार्मिक और नैतिक परिपक्वता की स्थिति में ले जाने के लिए ईश्वर द्वारा नियुक्त साधन है, लेकिन वह आपके कहे अनुसार सड़क के किसी भी कांटे को पकड़कर अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त करेगा। मुझे पृष्ठ 31 से लेकर पृष्ठ 32 तक पढ़ने दीजिए, वोस का एक अनुच्छेद। वह कहते हैं, “मनुष्य को कुछ ऐसा प्राप्त करना था जो उसके पास पहले नहीं था, उसे अच्छाई और बुराई के प्रति उसका स्पष्ट विरोध, और बुराई और अच्छाई के प्रति उसका स्पष्ट विरोध सीखना था। इस प्रकार, यह स्पष्ट हो जाएगा कि वह परिवीक्षा विकल्प में से किसी एक को चुनकर इसे कैसे प्राप्त कर सकता है। यदि वह खड़ा होता तो अच्छे और बुरे के बीच का अंतर उसके दिमाग में स्पष्ट रूप से मौजूद होता, अच्छे और बुरे को वह नई रोशनी से जानता होता जो उसके दिमाग को प्रलोभन के संकट के माध्यम से प्राप्त होता जिसमें दोनों टकराते थे। दूसरी ओर, यदि वह गिर गया होता, तो अच्छाई के साथ बुराई का विरोधाभास और भी अधिक स्पष्ट रूप से उस पर अंकित होता क्योंकि बुराई को चुनने का याद किया गया अनुभव और अच्छाई की इस स्मृति के विपरीत बुराई करने का निरंतर अनुभव सबसे

स्पष्ट रूप से दिखाया होगा कि दोनों कितने अलग हैं। तो आप देख रहे हैं कि वोस क्या कह रहा है, वह अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त करेगा जो आवश्यक रूप से अवांछनीय या दोषी नहीं था, उसने इसे किसी भी मामले में या तो आज्ञा मानने या अवज्ञा करने से प्राप्त किया होगा, और अच्छे और बुरे के ज्ञान का वृक्ष था उसे आज्ञा मानने या न मानने का विकल्प चुनने की स्थिति में रखकर उसे धार्मिक और नैतिक परिपक्वता में लाने का साधन।

पेड़ के वोस के दृश्य पर वेन्नॉय की प्रतिक्रिया: आत्म-देवीकरण दृश्य

ठीक है, कुछ लोग इस पर टिप्पणी करते हैं। मुझे वोस के दृष्टिकोण में कुछ समस्याएं दिखती हैं। मुझे लगता है कि यह केवल उत्पत्ति 3:22 के बारे में वोस की समझ के संबंध में एक संभावित दृष्टिकोण है। 3:22 में, जहां प्रभु कहते हैं, "देखो, मनुष्य अच्छे और बुरे को जानने वाले हम में से एक के समान हो गया है," वोस कहते हैं कि यह एक विडंबनापूर्ण कथन है। अतः यह वास्तव में अथवा वास्तविकता में सत्य नहीं है। अब मुझे लगता है कि वोस की समझ के लिए यह महत्वपूर्ण है कि क्या हो रहा है। यदि आप उत्पत्ति 3:22 को व्यंग्यपूर्ण कहकर अस्वीकार करते हैं और कहते हैं कि यह शाब्दिक और सत्य है, तो आपकी संपूर्ण व्याख्या प्रभावित होती है। दूसरे शब्दों में, यदि आप कहते हैं कि 3:22 बिल्कुल सच है और भगवान कुछ ऐसा कह रहे हैं जो वास्तव में तब हुआ जब मनुष्य ने वह फल खाया, तो आप कह रहे हैं कि खाने से, मनुष्य किसी तरह से भगवान जैसा बन गया जैसा कि वह था इससे पहले नहीं। "वह अच्छा और बुरा जानने वाले हम में से एक जैसा बन गया है।" तो फिर सवाल यह है कि कैसे? मनुष्य इस प्रकार परमेश्वर जैसा कैसे बन गया जैसा वह पहले नहीं था? और अतिरिक्त प्रश्न यह है कि ऐसा कुछ क्यों था जिसके लिए मनुष्य ईश्वर के समक्ष दोषी या दोषी था? यह मुझे तीसरे दृष्टिकोण पर लाता है। हमने एक पौराणिक दृष्टिकोण देखा है, वोस का दृष्टिकोण और अब एक तीसरा दृष्टिकोण जिसे मैं अपनाऊंगा, ऐसा नहीं है कि मैंने इसे विकसित किया है।

बेहतर शब्दावली के अभाव में, मैं इसे आत्म-देवीकरण दृष्टिकोण कहूंगा। उत्पत्ति 3:22 के उस कथन को ध्यान में रखते हुए, "मनुष्य अच्छा और बुरा जानकर हम में से एक के समान हो गया है," हमें यह प्रश्न पूछना चाहिए कि "जानना" शब्द का क्या अर्थ है, "मनुष्य एक के समान बन गया है" हम अच्छाई और बुराई जानते हैं।" "जानने" का क्या अर्थ है? यदि आप यह निर्धारित करते हैं, तो मुझे लगता है, आपने यह भी निर्धारित कर लिया है कि अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष की अभिव्यक्ति में "ज्ञान" शब्द का क्या अर्थ है। शब्द "ज्ञान" अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में एक बहुत ही असामान्य हिब्रू अभिव्यक्ति है। यह एक अपरिमेय रूप है, यह एक मौखिक संज्ञा प्रकार का विचार है, अच्छे और बुरे के ज्ञान का वृक्ष है। लेकिन यदि आप यह निर्धारित करते हैं कि उत्पत्ति 3:22 में "जानना" क्या है तो मुझे लगता है कि यह वही अर्थ है जो आप पेड़ के नाम में संज्ञा रूप पर लागू करेंगे। स्पष्ट रूप से जब आप कहते हैं "मनुष्य अच्छे और बुरे को जानने वाला हम में से एक बन गया है," तो इसे अनुभवात्मक ज्ञान के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए, दूसरे शब्दों में यदि उस प्रकार का ज्ञान जो स्वयं ईश्वर के पास है और ईश्वर के पास कोई अनुभवात्मक ज्ञान नहीं हो सकता है बुराई। दूसरे शब्दों में, ईश्वर कुछ बुरा नहीं कर सकता, यह उसके चरित्र का उल्लंघन है। मुझे लगता है कि वहां "जानना" शब्द को अंतर करने, निर्दिष्ट करने या निर्णय लेने की शक्ति के अर्थ में समझना सबसे अच्छा है। अच्छे और बुरे के बीच अंतर करना, निर्दिष्ट करना या निर्णय करना। दूसरे शब्दों में, मूल्य संबंधी निर्णय लेना।

यदि आप व्यवस्थाविवरण 1:39 को देखते हैं, तो आप पढ़ते हैं, "और तेरे छोटे बच्चे जिनके विषय में तू ने कहा है, कि वे शिकार होंगे, और तेरे बच्चे भी जिन्हें उस दिन भले बुरे का ज्ञान न था। वे वहां प्रवेश करेंगे और मैं उसे उसे दे दूंगा और वे उस पर अधिकार कर लेंगे।" अब यह उस पीढ़ी के संदर्भ में है जो जंगल में मर गई। छोटे बच्चों को बड़ा होना था और वे ही, अगली पीढ़ी थे, जो भूमि के उत्तराधिकारी होंगे। परन्तु वह कहता है, और यहां तेरे लड़केबाले थे, जिन्हें उस समय भले बुरे का ज्ञान न था। वे अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने, निर्दिष्ट करने या निर्णय लेने में सक्षम नहीं थे। वे इसके लिए बहुत छोटे थे। मुझे ऐसा लगता है कि उत्पत्ति 3:22 में शब्द का यही अर्थ है। इसे वास्तविक और सत्य के रूप में

लिया जा सकता है और वोस की तरह विडंबनापूर्ण नहीं। और इसका मतलब यह है कि मनुष्य ने स्वयं को यह निर्दिष्ट करने के लिए अपने स्वयं के मानदंड के रूप में स्थापित किया है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है। "मनुष्य हममें से एक बन गया है, यह जानकर कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है।" निर्दिष्ट करना, निर्णय लेना, नामित करना के अर्थ में जानना। जब उसने निषिद्ध वृक्ष का फल खाया तो वह जो कर रहा था वह ईश्वर से स्वतंत्र होकर अपनी अंतर्दृष्टि और निर्णय के अनुसार जीना चुन रहा था, यही उस कार्य का अर्थ था। तो भगवान कहते हैं, वह हम में से एक बन गया है, उसने खुद को मूल्यों के निर्धारक के रूप में स्थापित किया है। उसने स्वयं को मानो अपना ईश्वर बना लिया है, ऐसा करके वह उस विशेषाधिकार को हड़प लेता है जो केवल ईश्वर का है। मुझे लगता है कि उस परिवीक्षाधीन विकल्प में मुद्दे का मूल यह है कि मनुष्य अपना स्वयं का आदर्श बनना चाहता है, मनुष्य अपने लिए निर्दिष्ट करना चाहता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है।

अब, मेरे मन में यह सुझाव देने का विचार आया कि यदि आप उन शब्दों में बात कर सकें तो इस अर्थ में पेड़ एक नकारात्मक संस्कार बन जाता है। इसे मनुष्य के लिए ईश्वर के साथ संगति और उससे स्वतंत्र होने के लिए एक पवित्र प्रतीक के रूप में निषिद्ध किया गया था, जो कि सारतः मृत्यु है।

लेकिन किसी भी मामले में उत्पत्ति 3:22 में उस वाक्यांश पर वापस आते हैं "मनुष्य अच्छे और बुरे को जानने वाला हम में से एक के समान हो गया है।" यह उस दृष्टिकोण के बहुत करीब है जिसका मैंने अभी वर्णन किया है जिसे वोस भाषाई दृष्टिकोण कहता है जहां वह "जानना" शब्द से जुड़े इस तरह के विचार पर चर्चा करता है, जिसे वह यह कहकर खारिज कर देता है कि यह शायद ही एक संभावित दृष्टिकोण है क्योंकि यह नाम देता है पेड़ एक अपशकुन है, जो विनाशकारी परिणाम की आशंका करता है। हालाँकि मुझे लगता है कि इसका निहितार्थ अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष हो सकता है, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि यह इस विशेष दृष्टिकोण पर कड़ी आपत्ति है। मुझे लगता है कि सवाल यह है कि भगवान कौन है और वह कौन है जो सही और गलत का मानक तय करता है? जब मनुष्य ने अवज्ञा करना चुना तो उसने इसे अपने लिए स्थापित करने में परमेश्वर का स्थान ले लिया।

पेड़ के बारे में बाविक का दृष्टिकोण अब इस समझ को बढ़ावा देने वाला एक व्यक्ति हरमन बाविक है। मैंने इसे शीट पर नहीं रखा, मैंने शायद इसलिए नहीं रखा क्योंकि 1900 के दशक की शुरुआत में हरमन बाविक हॉलैंड में एक धर्मशास्त्री थे, जिन्होंने चार खंडों में *रिफॉर्मड डॉगमैटिक्स*, व्यवस्थित धर्मशास्त्र लिखा था, जिसका कभी भी अंग्रेजी में अनुवाद नहीं किया गया है, लेकिन यह समकक्ष है। मोटे तौर पर समय की दृष्टि से और निश्चित रूप से दायरे की दृष्टि से, यह चार्ल्स हॉज की तुलना में बेहतर काम हो सकता है। यह एक उत्कृष्ट व्यवस्थित धर्मशास्त्र है। उनके खंड तीन में मैं आपको एक पैराग्राफ पढ़ना चाहता हूँ जहाँ उन्होंने इस पर चर्चा की है क्योंकि मुझे लगता है कि वह इसे बहुत अच्छी तरह से व्यक्त करते हैं। वह कहते हैं, "अच्छे और बुरे का ज्ञान," अब यह मेरा अपना अनुवाद है, "अपने पैरों पर खड़े होने और स्वयं रास्ता खोजने की क्षमता की बात करता है और ईश्वर की इस क्षमता से खुद को मुक्त करने की मनुष्य की इच्छा की बात करता है . उत्पत्ति 3 ज्ञान की विषय-वस्तु पर अधिक निर्देशित नहीं है, बल्कि इसे प्राप्त करने के तरीके पर केंद्रित है। यहाँ स्पष्ट रूप से अच्छे और बुरे के ज्ञान की प्रकृति का वर्णन इस तथ्य से किया गया है कि इसके साथ मनुष्य ईश्वर के समान बन जाएगा, उत्पत्ति 3:5 और 22। ईश्वर की आज्ञा को तोड़कर और फल खाकर वह स्वयं को ईश्वर के समान बना देगा। इस अर्थ में, कि वह स्वयं को कानून से बाहर और ऊपर रखता है और जैसा कि ईश्वर स्वयं निर्धारित करेगा और निर्णय करेगा कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है। अच्छे और बुरे के ज्ञान का अर्थ सहायक और हानिकारक का ज्ञान नहीं है, बल्कि जैसा कि 2 शमूएल 19:35, यशायाह 7:16 में है, स्वतंत्र रूप से अच्छे को बुरे से अलग करने की क्षमता और क्षमता। उत्पत्ति इस प्रश्न से संबंधित है कि क्या मनुष्य ईश्वर पर निर्भरता में विकसित होगा, क्या वह ईश्वर की आज्ञा के अधीन रहकर अपनी खुशी की तलाश करेगा या क्या वह ईश्वर की आज्ञा को तोड़ देगा और अपने अधिकार और कानून से खुद को अलग कर लेगा, अपने पैरों पर खड़ा होगा, चुनाव करेगा वह अपना रास्ता खुद तय करता है और खुशी के लिए अपना रास्ता खुद तय करता है। जब मनुष्य गिर गया, तो उसे वह मिल गया जो वह चाहता था, उसने स्वयं को ईश्वर के समान



बना लिया, अपनी अंतर्दृष्टि और अच्छे और बुरे के निर्णय से स्वतंत्र हो गया, उत्पत्ति 3:22।  
 उत्पत्ति 3:22 बहुत ही गंभीर है, देखिए यह वोस के बिल्कुल विपरीत है, "बहुत ही गंभीर है  
 फिर भी ईश्वर से यह मुक्ति सच्ची खुशी की ओर नहीं ले जा सकती है। इस प्रकार भगवान ने  
 परिवीक्षा आदेश में स्वतंत्रता की इच्छा, स्वतंत्रता की इस लालसा को मना किया, लेकिन  
 मनुष्य ने जानबूझकर अपना रास्ता खुद तय करना चुना, और इसमें वह अच्छे और बुरे के  
 ज्ञान के पेड़ और निश्चित रूप से नाम के महत्व को देखता है। पतन का भी महत्व।”

यही मानवीय दुविधा है और हम अभी भी इससे जूझ रहे हैं।

ठीक है, हम इस बिंदु को बंद कर देंगे और कल स्त्री के निर्माण की बात शुरू  
 करेंगे।

केटलीन श्वांडा द्वारा प्रतिलेखित  
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
 राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन  
 टेड हिल्डेब्रांट  
 द्वारा पुनः सुनाया गया